ग्राम्य वार्ता
रविवार, 3 जनवरी, 2016

छात्रों को रोजगार दिलाना मेरी पहली प्राथमिकता: प्रो. पाठक

जगत बन्धु मिश्र

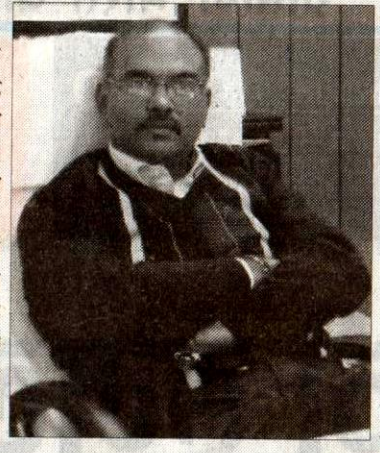

लखनऊ। हमारे विश्वविद्यालय से पढ़ कर निकलने वाले प्रत्येक छात्र को रोजगार मिले यह मेरी प्राथमिकता है। यह कहना है डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम टेक्निकल युनिवर्सिटी के कुलपति प्रो. विनय कुमार पाठक का। पिछले वर्ष अगस्त 2015 में एकेटीयू के कुलपति नियुक्त किए गए प्रो. पाठक अपनी तेज कार्यशैली के लिए जाने जाते हैं। शनिवार को दीक्षांत समारोह की तैयारियों में लगे होने के बावजूद उन्होंने ग्राम्यवार्ता के साथ बातचीत का समय निकाला। मूलतः सूबे के अंबेडकरनगर के रहने वाले प्रो. पाठक इसके पूर्व भी उत्तरांचल विश्वविद्यालय, तीर्थांकर महावीर विश्वविद्यालय, व वर्धमान ओपन युनिवर्सिटी के कुलपति रह चुके हैं। उनकी एकेटीयू में नियुक्ति के समय विश्वविद्यालय काफी समस्याओं से ग्रस्त था, जिन्हें प्रो. पाठक ने न केवल दूर किया बल्कि भविष्य में विश्वविद्यालय कैसे सूबे में अपनी पहचान को कायम रखे इसके लिए भी इंतजाम किए हैं।

परीक्षा व्यवस्था को किया सुचारू

अपने कुलपति कार्यकाल के दौरान प्रो. पाठक ने एकेटीयू की पटरी से उतर चुकी परीक्षा व्यवस्था को सुचारू रुप से चलाया। उनके आने के बाद प्रवेश से लेकर तमाम दूसरी चीजों में तकनीक का सहारा लिया गया। यह उनका ही विजन है कि आज एकेटीयू की परीक्षाओं में मूल्यांकन से लगाकर छात्रों को डिग्री देने तक का कार्य बेहद आसान तरीके से संभव हो सका। गौरतलब है कि पूर्व में एकेअीयू के छात्रों की सबसे बड़ी समस्या उनकी डिग्री थी। छात्रों का कहना था कि एकेटीयू से संबद्ध कॉलेज उनहें डिग्री देने के लिए काफी परेशान करते हैं। जिसके बाद कुलपति की ओर से छात्रों की डिग्री को कूरियर से भिजवाने की व्यवस्था की गई।

एकेटीयू के नवीन परिसर में की बड़ी बचत

किसी भी विश्वविद्यालय के लिए दो सौ करोड़ रुपए की क्या अहमियत होगी यह तो कोई भी समझ सकता है। लेकिन इसे केवल समझा ही नहीं बल्कि इतनी बढ़ी बचत प्रो. पाठक ने अपने विश्वविद्यालय में कर के दिखाई। बताते चलें कि एकेटीयू के नवीन परिसर को तैयार करने के लिए लागत का आंकलन तकरीबन चार सौ साठ करोड़ रुपए था, जबकि प्रो. पाठक ने इस पूरे काम को महज एक सौ अस्सी करोड़ रुपए के अंदर ही कर दिखाया। उनके करीबी कहते हैं कि काम को लेकर जुनून की हद तक जाना उनकी खासियत है।

शिक्षकों की कमी हुई दूर

लंबे समय से एकेटीयू की बात करें तों यहां दक्ष शिक्षकों का टोटा था। प्रो. पाठक के अनुसार अनुभवी व दक्ष शिक्षकों की कमी से जहां एक ओर हमारे पाठ्यक्रम को अपडेशन नहीं मिल पा रहा था, वहीं दूसरे ओर इसका असर छात्रों की पढ़ाई की गुणवत्ता पर भी पड़ रहा था। उन्होंने बताया कि इसके लिए विश्वविद्यालय के स्तर पर फैकेल्टी डेवलेपमेंट का प्रोग्राम चलाया गया। इसमें हमने तकरीबन दस हजार के करीब शिक्षकों को दक्ष किया है। विश्वविद्यालय की ओर से उन्हें प्रमाणित कर संस्थानों में पढ़ाने के लिए अधिकृत किया जाएगा। गौरतलब है कि पिछले काफी समय से एकेटीयू से संबद्ध कॉलेजों में ज्यादातर ऐसे शिक्षकों की नियुक्ति की शिकायतें आ रही थी। जिन्होंने वहीं शिक्षा प्राप्त की और बिना उचित अनुभव के उन्हें वहां पढ़ाने की जिम्मेदारी सौंप दी गई।

संस्थानों को सौंपी सामाजिक जिम्मेदारी की कमान

प्रो. पाठक ने बतौर कुलपति सामाजिक जिम्मेदारियों का भी ख्याल रखने में कोई कसर नहीं छोड़ी है। उनके द्वारा एकेटीयू से संबद्ध कॉलेजों को अपने पास का एक गांव गोद लेने और वहां बच्चों व शिक्षकों द्वारा सामाजिक कार्यों को प्रमुखता से करने के निर्देश भी दिए गए हैं। बताते चलें कि एकेटीयू से संबद्ध सूबे में तकरीबन छह सौ से ज्यादा उच्च शिक्षण संस्थान हैं। इन संस्थानों ने कभी इस प्रकार की कोई जिम्मेदारी के बारे में सोंचा ही नहीं था। लेकिन कुलपति के प्रयास से उन्हें ऐसा करने का मौका मिला और कुलपति की ओर से इसकी बाकायदा रिपोर्ट भी परखी जाती है।

छात्रों की समस्याएं हुई समाप्त

एकेटीयू से संबद्ध कालेजों का दायरा पूरे सूबे में है। इसमें पढ़ने वाले लाखों छात्रों की समस्याएं इतनी थी कि लगता था उन्हें निपटानां तो दूर सुनने की भी कोई कोशिश जिम्मेदारों ने कभी नहीं की। कुलपति की कुर्सी संभालते ही प्रो. पाठक ने न केवल इस बारे में सोंचा बल्कि छात्रों की समस्याओं को निपटाने के लिए कई कमेटियों का गठन भी किया। इसमें सर्वाधिक चर्चित रहा कुलपति की ओर से एक माह तक चलाया गया छात्र समस्या निवारण कैंप रहा। इसमें न केवल राजधानी के कॉलेजों बल्कि दूर-दराज के कॉलेजों के छात्रों की समस्याओं का फौरन समाधान किया गया।

मार्केट ओरिएंटेड कोर्स की करते हैं वकालत

प्रो. पाठक कहते हैं कि कोर्स ऐसा हो कि छात्रों को बाजार में सही रोजगार मिले और इसके लिए हमें मार्केट ओरिएंटेड कोर्स को ही छात्रों को पढ़ाना होगा। छात्रों को बाजार के अनुरूप पाठ्यक्रम देने के लिए प्रो. पाठक ने आईआईटी मुंबई, आईआईटी दिल्ली , खड़गपुर के साथ ही देश के प्रतिष्ठित आआईएम के दक्ष प्रोफेसरों की एक टीम बनाई जो पाइयक्रम को अपग्रेड करने पर काम कर रही है। हालांकि इसका परिणाम दूरगामी है। लेकिन अगर प्रयोग सफल रहा तो एकेटीयू के छाओं की धाक देश में ही नहीं बलिक अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर होगी।

सेंट्रल प्लेसमेंट का किया श्रीगणेश

किसी भी संस्थान की सबसे बड़ी उपलब्धि उसके छात्रों को रोजगार मिलना माना जाता है। बतौर एकेटीयू कुलपति प्रो. पाठक ने संस्थानों की इस नब्ज को पकड़ा और छात्रों को रोजगार दिलाने के लिए सेंट्रल प्लेसमेंअ की व्यवस्था का श्रीगणेश कर दिया। कुलपति की ओर से सूबे के सभी एकेटीयू से संबद्ध संस्थानों में प्लेसमेंट सेल बनाए जाने के निर्देश दिए गए हैं। इस सेल का काम है कि वह छात्रों के लिए कंपनियों व दूसरी संस्थाओं से बातचीत करे और छात्रों की पलेसमेंट संबंधी समस्या को दूर करे। इतना ही नहीं कॉलेजों को अगर इसके लिए कोई विशेष सुविधा भी चाहिए तो उसके लिए कुलपति की ओर से पूरी व्यवस्था की जाएगी। इससे न केवल कॉलेजों को प्रत्येक वर्ष अच्छे दाखिले मिलेंगे बल्कि पढ़ाई के बाद छात्रों को रोजगार के लिए भटकना भी नहीं पड़ेगा।

● *छात्रों को रोजगार मिलना चाहिए, इसके लिए मेरा प्रयास है कि शैक्षणिक सत्र को ठीक ढंग से चलाया जाए ताकि छात्रों को जो चाहिए वह उन्हें समय पर उपलब्ध हो। हालांकि हम वर्तमान में मैनपावर की समस्या से दो-चार हो रहे हैं लेकिन अपना पूरा प्रयास हम विश्वविद्यालय के हित में करेंगे।*

प्रो. विनय कुमार पाठक, कुलपति, डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम टेक्निकल युनिवर्सिटी